विवादास्पद शादी

टेनिस की 'सनसनी' कही जाने वाली सानिया मिर्जा की पाकिस्तान के पूर्व क्रिकेट कप्तान शोएब मलिक से होने वाली शादी भी 'सनसनीखेज' बन गई है। आएशा नाम की युवती ने शोएब पर यह आरोप लगाया है कि उन्होंने पहले उससे शादी की थी और वह गर्भवती भी हुई थी, पर बाद में गर्भपात हो गया। इधर मलिक इस सब से इनकार कर रहे हैं और आरोप लगाने वाली लड़की को सामने आने की बात कर रहे हैं।

शादी-विवाह किसी का भी निजी मामला होता है, पर चूंकि दोनों सेलिब्रिटी हैं, इसलिए इनकी शादी मीडिया में गूंज रही है। मीडिया को इनकी शादी ने इतना अच्छा मसाला दे दिया है कि देश-दुनिया की सारी ख़बरें लुप्त हो गई, सिर्फ़ यही ख़बर रह गई।

जहां तक शोएब का सवाल है, हमें इससे कोई लेना-देना नहीं कि वे पहले से शादीशुदा हैं। हम तो बस इतना ही जानते हैं कि यह सानिया की 'पहली' शादी है। वैसे एक तमिल अभिनेत्री खुशबू ने जब बयान दिया था कि शादी के पूर्व सेक्स संबंध बनाने में कोई ग़लत बात नहीं तो सानिया ने इसका समर्थन किया था। उन्होंने पूरे बोल्डनेस के साथ कहा था कि विवाह पूर्व सेक्स संबंधों को वो बुरा नहीं मानतीं। सानिया द्वारा टेनिस खेलने के दौरान बहुत छोटे कपड़े पहनने पर मुल्ला-मौलवियों ने काफ़ी शोर-शराबा मचाया। इसका परिणाम यह हुआ कि उन्होंने और छोटे कपड़े पहने। इन्होंने मुल्ला-मौलवियों को खूब चिढ़ाया। बहरहाल, जब बात शादी की चली है तो पहले कहा जा रहा था कि इनकी शादी एक बालसखा से होगी, यहां तक कि मंगनी भी हो चुकी है। पर अब पाक के पूर्व कप्तान और पहले से 'शादीशुदा' मैदान में झंडे गाड़ने के लिए तैयार हैं। कहते हैं कि सानिया शादी की इतनी जल्दी इसलिए कर रही है कि टेनिस में अब उसका कैरियर लगभग खत्म-सा हो गया है। वर्ल्ड रैंकिंग में सौवें स्थान से भी पीछे चली गई हैं।

शादी के बाद इनको पाकिस्तान की नागरिकता मिल जायेगी। फ़िर भी वह कह रही हैं कि भारत की ओर से खेलना जारी रहेगा। आखिर कैसे? पाकिस्तानी खिलाड़ी भारत में तो खेल सकता है, पर भारत के लिए कैसे खेल सकता है? हां, अगर आईपीएल जैसा तमाशा हो तो किसी देश का खिलाड़ी किसी भी देश की तरफ़ से खेल सकता है। पर टेनिस में इसकी संभावना नहीं है।

रामलला चाहेंगे तो...

जब संन्यासिन उमा भारती ने अपनी भारतीय जनशक्ति पार्टी से इस्तीफ़ा दे दिया और ऋषिकेश चली गईं तो उनके 'प्रेमी' गोविंदाचार्य ने भी अपने संगठन राष्ट्रीय स्वाभिमान आंदोलन से इस्तीफ़ा दे दिया और अपनी प्रेमिका 'साध्वी' उमा भारती से मिलने निकल पड़े। बरसों पहले गोविंदाचार्य ने एक मैगज़ीन को इंटरव्यू देने के दौरान यह स्वीकार किया था कि वे और उमा भारती प्यार के खेल में इस कदर डूबे थे कि शादी करना लगभग तय हो गया था। पर बुरा हो संघ का जिसने शादी की राह में रोड़े अटका दिये। अगर संघ रोड़े न अटकाता तो आज गोविंदाचार्य और उमा भारती की अच्छी-खासी गृहस्थी होती। खैर, संघ ने शादी होने नहीं दी, पर दो दिलों को एक-दूसरे के लिए तड़पने से वह कैसे रोक सकता था और इश्क का असली मज़ा तो मिलन के लिए होने वाली तड़प में ही है।

एक समय था जब गोविंदाचार्य की भाजपा में जबरदस्त पूछ थी। वे पार्टी के थिंक टैंक थे। पर उन्होंने तत्कालीन प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी को मुखौटा क्या कहा, भाजपा में किनारे कर दिये गये। यद्यपि बाद में ग़लती स्वीकार कर उन्होंने वाजपेयी को मुकुट तक कहा, पर इसका कोई फल नहीं मिला।

उन्हें दरकिनार कर दिया गया। आगे चल कर उमा भारती का भी वही हाल हुआ जब उन्होंने आडवाणी-अटल पर जिन्ना प्रकरण के दौरान वार करना शुरू कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि उन्हें भाजपा छोड़नी पड़ी। आगे चल कर भाजपा में अपनी वापसी के लिए उमा ने लाख कोशिशें की, पर सब व्यर्थ साबित हुईं। आखिरकार उन्होंने एक नई पार्टी बना ली। पर चुनावों में उनकी दुर्दशा हो गई। वे समझ गईं कि अपनी पार्टी के भरोसे आगे बढ़ पाना नामुमकिन है। गोविंदाचार्य भी इस बात को समझ गये। यही कारण है कि दोनों ने अपनी पार्टी व संगठन से इस्तीफ़ा दे दिया और भाजपा में शामिल होने की आस में संघ नेताओं के आगे-पीछे चक्कर काट रहे हैं। संघ नेता उनसे कह रहे हैं-रामलला चाहेंगे तो पार्टी में वापसी हो जाएगी।

मंदिर नहीं बनेगा

विश्व हिंदू परिषद् के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक सिंघल ने एक अजीब बात कह डाली। उन्होंने कहा कि अगर आडवाणी ने रथयात्रा न की होती तो अब तक अयोध्या में राममंदिर बन गया होता। उन्होंने यह भी कहा कि रथयात्रा वीपी सरकार से समर्थन वापसी के एक बहाने के रूप में की गई या नहीं, इसे अशोक सिंघल से अच्छी तरह भला कौन जान सकता है। अशोक सिंघल उसी संघ परिवार के एक सदस्य हैं जिसके आडवाणी। फिर सिंघल किस आधार पर कहते हैं कि रथयात्रा के कारण ही मंदिर नहीं बन सका। उनका कहना है कि अगर रथयात्रा न की जाती तो सभी दलों को समझा-बुझा कर मंदिर बनवा लिया जाता। आखिर सभी दल कैसे इस बात को समझ लेते और मंदिर बनवाने की सहमति दे देते?

क्या कांग्रेस इस पर तैयार हो जाती? राममंदिर का ताला तो राजीव गांधी ने ही खुलवाया था। पर उस समय कांग्रेस का बुरा हाल था जब आडवाणी ने रथयात्रा शुरू की थी। सिंघल को यह समझ लेना चाहिए कि भाजपा को सत्ता में लाने में आडवाणी की रथयात्रा की बड़ी भूमिका रही है। भाजपा के निंदक तक यह कहते हैं कि आडवाणी की रथयात्रा ने ही भाजपा को पहचान दिलाई। पता नहीं, इस बात को सिंघल क्यों नहीं समझ रहे? उस समय तो विहिप आडवाणी के समर्थन में बढ़-चढ़ कर नारे लगा रहा था। दरअसल, भाजपा सत्ता में रही नहीं, सो अब मलाई खाने को नहीं मिलती। मलाई चाटने को मिले तो चुप रहें वरना अपनी खुन्नस निकालने लगें। जहां तक अरेस्ट राममंदिर बनने का सवाल है, वह भविष्य में कभी नहीं बनेगा। अगर इस बात से इनकार है तो सिंघल इस काम पर विहिप को ही लगा दें, छोड़ें भाजपा को।

गपशप

अरेस्ट मी

जींस टॉप डाले एक नवयुवती बाज़ार में हंसिनी की चाल चली जा रही थी और बहुत से लोग मुड़-मुड़ कर उसे देखे चले जा रहे थे। सभी नज़रें उसे ही घूरती नज़र आ रही थीं। आखिर माज़रा क्या है? साथ चल रहे मेरे साथी ने आगे बढ़ कर उसे देख लिया और कहने लगा कि तू भी देख आ।

मैंने पूछा-क्या कोई खास बात है? उसने कहा-बहुत ही खास बात है। नहीं देखेगा तो पछतायेगा। मैंने सोचा, क्या खास बात है? फ़िर मैंने अपनी चाल तेज कर दी और भीड़ से बचते हुए उसके आगे पहुंच गया और उसे एक नज़र देखा। तभी मुझे समझ में आ गया कि लोगबाग क्यों उसे मुड़-मुड़ कर देख रहे हैं। उसे विशेष रूप से देखे जाने की वजह उसकी टी-शर्ट थी। टी-शर्ट पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था-'**बीइंग सेक्सी इज़ ए क्राइम, देन अरेस्ट मी।**'

कामसूत्र के देश में

राष्ट्रमंडल खेलों के लिए एक लाख कंडोम की व्यवस्था की जा रही है। जब यह समाचार अख़बारों में पढ़ा तो आश्चर्यचकित हो गया। आखिर खेल-आयोजन में कंडोम की जरूरत कैसे पड़ गई। खिलाड़ी खेलने आ रहे हैं या मौज-मस्ती करने? जो खिलाड़ी अपनी बीवियों या महिला मित्रों के साथ भी आयेंगे, उनके दिमाग में खेल की बात होगी या सेक्स की। यह ठीक है कि इन खेलों में सिर्फ खिलाड़ी ही नहीं, अन्य लोग भी आयेंगे, तो क्या वे जरूरत पड़ने पर अपने लिए कंडोम खरीद नहीं लेंगे। फ़िर सरकार इसकी व्यवस्था के लिए क्यों चिंतित हो रही है। खेलों से कंडोम का क्या संबंध है? यह एक विचित्र बात है। इससे पता चलता है कि सरकार राष्ट्रमंडल खेलों के प्रति कितनी गंभीर है। बहरहाल, सरकार जब खिलाड़ियों और उनके साथ आने वाले मैनेजरों-अफ़सरों के लिए कंडोम उपलब्ध करा रही है तो फ़िर उन लोगों के लिए जो अकेले आयेंगे, क्या एस्कार्ट्स और कॉलगर्ल्स की भी व्यवस्था करेगी? क्या पता? सरकार से कुछ हो या न हो, इस तरह के काम तो कर ही सकती है। आखिर 'कामसूत्र' का देश है अपना भारत।

वीर तुम डटे रहो

दांतेवाड़ा में अब तक की सबसे बड़ी नक्सली हिंसा में वीर की सेना के 76 जवान मारे क्या गये, वीर गृहमंत्री ने इसकी जिम्मेवारी लेते हुए प्रधानमंत्री को इस्तीफ़ा सौंप दिया। लेकिन उनका इस्तीफ़ा स्वीकार नहीं किया गया। जब गृहमंत्री लालगढ़ गये थे तो उन्होंने बंगाल के मुख्यमंत्री को लालगढ़ में हो रही नक्सली हिंसा के लिए राज्य सरकार को जिम्मेवार ठहराया था और कहा था कि इसे रोकना राज्य सरकार का काम है, केंद्र इसमें उसकी मदद कर सकता है। इससे बंगाल के मुख्यमंत्री एवं अन्य कामरेड नाराज़ हो गये थे। दांतेवाड़ा में हुई हिंसा पर कामरेडों ने चुटकी ली कि यह किसकी जिम्मेवारी है। इस पर अपनी जिम्मेवारी स्वीकार करते हुए गृहमंत्री ने तुरंत इस्तीफ़ा दे दिया। कामरेडों की बोलती बंद हो गई। गृहमंत्री जानते थे कि किसी भी हाल में इस्तीफ़ा स्वीकार नहीं किया जायेगा। भाजपा ने गृहमंत्री से कहा कि पीठ दिखा कर न भागें, डटे रहें। कुछ अति उत्साही लोगों ने जिनमें एक जेएनयू के प्रोफ़ेसर शामिल हैं, नक्सलियों को नेस्तनाबूद करने के लिए सेना उतारने की सलाह सरकार को दी। यानी सामने पहाड़ हो, सिंह की दहाड़ हो, वीर तुम डटे रहो।

सेक्स वर्कर और अंग्रेज़ी

एक अख़बार में छपी ख़बर के अनुसार दिल्ली की सेक्स वर्करों में अंग्रेज़ी सीखने की होड़ मची हुई है। ऐसा इसलिए कि राष्ट्रमंडल खेलों में भारी संख्या में विदेशी आयेंगे और उन्हें सेक्स की भूख शांत करने के लिए सेक्स वर्करों की जरूरत होगी। इस बात को सेक्स वर्करों ने भांप लिया है।

विदेशियों को अपने जाल में फंसाने में सेक्स वर्करों को सुविधा तब होगी जब वे अंग्रेज़ी में बातचीत और मोल-भाव कर सकें। वैसे पांच-सितारा होटलों में अभिजात वर्ग की सेवा करने वाली कॉल गर्ल्स ज़्यादा तो नहीं, पर कामचलाऊ अंग्रेज़ी बोल लेती है। लेकिन राष्ट्रमंडल खेलों के दौरान भारी भीड़ जुटने का अनुमान है। इससे हर तरह की वेश्यायें उत्साहित हैं कि उनका धंधा चमकेगा। पर जो वेश्या अंग्रेज़ी नहीं जानेगी, वह अंग्रेज़ी जानने वालियों से पीछे पड़ जायेगी। इसलिए वे अंग्रेज़ी सीखने पर आमादा हैं। कहा जा रहा है कि इस काम में मीडिया वालों के साथ कुछ स्वयंसेवी संगठन भी लगे हुए हैं यानी सेक्स वर्करों को स्पोकेन अंग्रेज़ी सिखा रहे हैं।

माया के रास्ते पर नीतीश?

पटना में ब्राह्मण समाज राजनैतिक चेतना समिति द्वारा आयोजित सामाजिक एकजुटता सम्मेलन में नीतीश कुमार ने भी भाग लिया और ब्राह्मण समुदाय को मार्गदर्शक घोषित कर दिया। इन्होंने ब्राह्मण की तुलना चाणक्य से की और कहा कि सत्ता में इन्हें भी हिस्सेदारी मिलेगी। नीतीश कुमार के भाषण से ऐसा लगता है कि कहीं ये भी मायावती के रास्ते पर तो नहीं चल पड़े जिनका कहना है कि 'ब्राह्मण शंख बजायेगा, हाथी बढ़ता जायेगा।' चुनाव में पूर्ण बहुमत वाली जीत हासिल करने के पहले मायावती ने पूरे यूपी में ब्राह्मण सम्मेलनों का आयोजन किया था। कहीं नीतीश भी ऐसा ही करने तो नहीं जा रहे हैं? इसी साल चुनाव है। चुनाव में जीत के लिए तरह-तरह की बाज़ीगरी करनी पड़ती है। वैसे नीतीश निश्चिंत रहें। अभी बिहार में उनका कोई विकल्प नहीं है।

राजनीति बनाम बिज़नेस

जहां एक ओर गांवों में पंचायत चुनाव, वहीं दूसरी ओर शहर में नगर-निगम के चुनावों की चहल-पहल शुरू हो गई है। जगह-जगह उम्मीदवारों के पोस्टर गलियों तथा चौराहों पर नजर आते हैं। पहले नव वर्ष, लोहड़ी तथा मकर संक्रांति की शुभकामनाएं, उसके बाद नवरात्रों, रामनवमी और अब बैसाखी पर्व की शुभकामनाएं देने के माध्यम से कितने ही नये चेहरे राजनीति की चौखट की ओर अपने कदम बढ़ा रहे हैं।

दीवारों की रंगाई, पोस्टर तथा साईनबोर्ड पर खर्च शहर में पार्षद चुनावों पर ही नहीं बल्कि गांवों में भी हो रहे हैं। सरपंच पद के उम्मीदवार उसी तर्ज पर गांववासियों को शुभकामनाएं दे रहे हैं। हमारे देश के हर चुनाव में जाति का आधार विशेष मुद्दा होता है, चाहे वह लोकसभा के चुनाव हों या गांवों में पंचायत चुनाव, हर जगह गुटबाजी और चुनावी संग्राम की तैयारियां जोरों पर हैं। चुनावों की घोषणा होते ही शराब की बिक्री में भी भारी इजाफ़ा होने लगा है। इसे हम अपने देश का दुर्भाग्य ही कहेंगे कि एक बड़ा मतदाता वर्ग शराब का आदी है। हर छोटा-बड़ा नेता अपना वोट बैंक बनाने में लगा हुआ है। वोटर की हर ख्वाहिश पूरी करने के लिए वह तत्पर है।

राज्य भर में पार्षद व पंचायत चुनाव मई-जून में शुरू होने हैं, लेकिन नोट के बदले वोट की राजनीति का खेल अभी से शुरू हो गया है। यहां पर एक विचारणीय तथ्य सामने आता है कि ये लोग जो पैसे को पानी की तरह बहा रहे हैं, आखिर इनका उद्देश्य क्या है? समाज सेवा करना या देश सेवा करना? नहीं, इनका सिर्फ एक ही उद्देश्य समाज सेवा के नाम पर देश को लूटना है। वे भली-भांति जानते हैं कि राजनीति में पैसा खर्च करना जाया नहीं जाता बल्कि सूद सहित वापिस होता है।

जिस तरह एक उद्योगपति कारोबार में अपना पैसा लगाता है और फिर बैठे-बैठे मुनाफे के रूप में भारी रकम बटोरता है। ठीक उसी तरह नेता उद्योगपति के रूप में राजनीति के कारोबार में अपना पैसा लगाता है जिसका सिर्फ एकमात्र उद्देश्य होता है मुनाफा, मुनाफा और मुनाफा। लोकसभा, विधानसभा, पार्षद और पंचायत चुनाव इस कारोबार की श्रेणियां हैं। बड़ा उद्योगपति लोकसभा, विधानसभा के चुनाव पर पैसा लगाता है फिर पार्षद और सबसे नीचे सरपंच। एक छोटे से छोटे गांव में भी सरपंच पद के उम्मीदवार लाखों रुपये खर्च कर देते हैं और फिर बनने के पश्चात ग्राम विकास की ग्रांट के नाम पर उसे सूद सहित वापस करते हैं।

लोकसभा और विधानसभा के उम्मीदवार करोड़ों में खर्च करते हैं और फिर अरबों में खेलने लगते हैं। इससे बड़ी देशा सेवा और क्या हो सकता है! यही है हमारे देश की राजनीति के कारोबार की सच्चाई और उद्योगपति नेताओं की हकीकत।

-ग्रामीण प्रतिनिधि